एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति

•

श्रीधर शास्त्री, महामंत्री

पंडित परिषद्, प्रयाग

•

शास्त्री प्रकाशन

१८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद

•

एकेडमी प्रेस, इलाहाबाद

•

मो० - ९४१५३६५७५९

आत्म निवेदन

- पूज्य पिता श्री स्वर्गीय पण्डित दीनबन्धु मिश्र की स्मृति में प्रकाशित कर्मकाण्ड की पद्धतियों के क्रम में एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति आपके समक्ष है।

•

- मनुष्य पिता की मृत्यु तिथि को प्रतिवर्ष जो श्राद्ध करता है, उसे सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं। उसी श्राद्ध को कराने के लिए यह पद्धति प्रकाशित है। विश्वास है, इससे आपको सुविधा होगी।

संवत् २०५५ : १९९८
१९० बहादुरगंज, इलाहाबाद-३

श्रीधर शास्त्री, महामंत्री
पण्डित परिषद, प्रयाग

Home

॥ श्राद्ध सामग्री ॥

चंदन घिसा हुआ १ दिगली	५ पान-५ सुपारी
तिल १० ग्राम	पलाश का पत्ता १५
जवा १० ग्राम	दोनिया १५
चावल १ पाव	गंगा जल, गंगा मिट्टी
कच्चा दूध २ पाव	गोबर का कंडा खीर पकाने हेतु
शहद १० ग्राम	जनेऊ २ जोड़ा
घी १० ग्राम	वस्त्र पिंडा पर चढ़ाने हेतु
देशी कपूर आरती के लिए	फल ५
कच्चा सूत १ हाथ का	कुशा-मोटक-पैंती
सफेल फूल माला	एक हांडी छोटी खीर पकाने के लिए
तुलसी पत्र	धूपबत्ती
१ दीपक तिल या सरसों के तेल का	ब्राह्मण भोजन
चीनी १ छटांक	पान दक्षिणा

एक व्यक्ति के लिये श्राद्ध

एक उद्देश्य का एकोदि्दष्ट श्राद्ध विधि /प्रेत श्राद्ध

- ☐ श्राद्ध के दिन घर के आंगन मे श्राद्ध करने के निमित्त स्थान को गोबर से लीप कर, पीली सरसों तथा तिल छिडक कर पवित्र कर लें।
- ☐ गोबर का कंडा की अग्नि तैयार कर मिट्टी की नयी-शुद्ध हांडी में पिण्ड के लिये खीर पकायें।
  1. स्वयं पकाएं अथवा श्राद्धकर्त्ता की पत्नी भी खीर पका सकती हैं।
  2. लोहे के पात्र में खीर नहीं पकाना चाहिए और लोहे की कलछुल आदि से चलाना भी नहीं चाहिए।
  3. खीर चलाने के लिए सरकंडा या अन्य कोई पवित्र लकड़ी का उपयोग करना चाहिए।
  4. हांडी में चावल-दूध-घी-शहद बाद में चीनी मिलानी चाहिए। सभी वस्तुएं एक बार छोड़कर पकने के लिए अग्नि पर रख दें। बार-बार देखना चलाना नहीं चाहिए।
- ☐ एक तिल या सरसों के तेल का दिया जला दक्षिण दिशा में संभाल कर रख दें।
- ☐ श्राद्ध पूर्ण होने तक दीपक बुझने नहीं पावे—पूरी व्यवस्था कर दें।
- ☐ दीपक में १ ही बाती लगायें—दीपक का मुख दक्षिण दिशा में रहे।
- ☐ अपने सामने स्वच्छ-शुद्ध मिट्टी लेकर १ बीता लम्बी-चौड़ी १ वेदी पिण्ड दान के लिए बनावें।
- ☐ वेदी दक्षिण दिशा की ओर नीची रहे। जिससे जल गिरने पर दक्षिण दिशा की ओर ही बहे।

☐ वेदी पर कोई तिनका-काड़ा-मकोड़ा आदि न रहे–सावधानी से देख लें।

☐ वेदी के आगे (दक्षिण की ओर) तीन पत्ता को जोड़कर बनाए हुए तिप्ता (चट) आसन के लिए रखें।

☐ आसन (तिप्ता) के सामने वेदी की ओर तिप्ता से मिला कर १ पत्ता भोजन पात्र के लिए रख दें।

☐ भोजन पात्र पर १ दोनिया अर्घपात्र के लिए रख दें।

☐ ३ कुशा को एक में मिलाकर गांठ लगा ले। इसी त्रिकुश से पूजन होता है।

☐ २ कुशा को बट कर बीच से मोड़ कर मूल भाग (जड़) तथा अग्र भाग को मिला कर गांठ लगा ले–इसे मोटक कहते हैं–इसी से पिण्डदान आदि होता है।

☐ २ कुशा के बीच वाले हिस्से को निकाल कर दोनों को बट कर गाँठ लगाकर दाहिने हाथ में पहनने के लिए १ पवित्री (पैंती) बना लें।

☐ इसी तरह ३ कुशा की १ पवित्री बाएं हाथ के लिए तैयार कर लें।

☐ पवित्री (पैती) दोनों हाथों में अनामिका (तीसरी) अंगुली में पहनी जाती है।

☐ १ कुशा को बट कर मूल-अग्र भाग मिला कर गांठ लगाकर १ मोटक-आसन के लिए तैयार कर लें।

●

॥ श्राद्ध प्रारम्भ ॥

☐ पूर्व की ओर मुख करके बैठें, त्रिकुश से अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर जल छिड़कें–

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

☐ ३ बार आचमन करें।

ओम् नारायणाय नमः। केशवाय नमः। माधवाय नमः।
हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

☐ हाथ धोकर पवित्री (पैंती) पहनें।

☐ दीपक पर अक्षत-तिल छोड़ कर प्रार्थना करें–

हे दीप देव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्न कृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।

☐ बाएं हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे ढंक कर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ओम् नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।

इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः।

☐ दाहिने हाथ से २-२ दाना सरसों चारों दिशा में छिड़के–मंत्र पढ़ें–

पूर्व में – प्राच्यै नमः । दक्षिण में – अवाच्यै नमः।

पश्चिम में – प्रतीच्यै नमः । उत्तर में – उदीच्यै नमः ।

ऊपर आकाश में – अन्तरिक्षाय नमः । नीचे भूमि में – भूम्यै नमः ।

☐ हाथों की शेष सरसों अपने सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ अपने सामने भूमि पर जल-अक्षत-चंदन-पुष्प चढ़ाकर पूजन कर दें–
पूजन वाक्य पढ़ता रहे–

। श्राद्धभूम्यै नमः ।

☐ १ कुशा को ३ बार मोड़कर २ दाना तिल लेकर अपनी दाहिनी टेंट में (धोती में)

लपेट लें–निम्न मंत्र पढ़ें–

ओम् सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्योनिरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि।

☐ त्रिकुश अक्षत-जल लकर संकल्प करें–

अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक दिवसे च अमुक गोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः (गोत्रायाः मातुः अमुकी नाम्नी देव्याः) सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धमहं करिष्ये।

☐ हाथ का कुश-अक्षत-जल-भूमि पर छोड़ दें।

☐ ३ बार गायत्री का जप करे–

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा पहन लें, अपसव्य हो जाय।

- ☐ दक्षिण दिशा में मुख करके बैठें। बायें पैर का घुटना मोड़ लें।
- ☐ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल तथा एक दूसरा मोटक (आसन के लिए) लेकर संकल्प करें–

अद्य अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक शर्मणः (गोत्रायाः मातुः अमुकी नाम्नी देव्याः) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे इदमासनं ते स्वधा।

- ☐ दूसरा मोटक सामने आसन तिप्ता पर रख दें।
- ☐ पहला मोटक अपने सामने भूमि पर रख दें।
- ☐ हाथ में लगा तिल-जल आसन मोटक पर छोड़ दें।
- ☐ दाहिने हाथ में तिल लेकर भोजन पात्र पर छिड़क दें, मंत्र पढ़ें–

ओम् अपहताअसुरा रक्षा ꣳ सि वेदिषदः।

- ☐ हाथ में तिल लेकर पिता या माता का आवाहन करे, निम्न मंत्र पढ़ें–

ओम् आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रु वन्तु ते ऽवन्त्व स्मान्।

- ☐ तिल आसन पर छिड़क दें।
- ☐ कुशा का मूल भाग निकाल कर १ कुशा में गांठ लगा कर कुशा का अग्रभाग दक्षिण की ओर रहे–इस ढंग से आसन के सामने रखी दोनिया (अर्घपात्र) में रख दें, रखते समय मंत्र पढ़ें–

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने यत् तच्छकेयम्।

- ☐ अर्घपात्र (दोनिया) में जल भर दे, मंत्र पढ़ता रहे–

ओम् शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँयो रभि स्रवन्तु नः।

- ☐ दोनिया (अर्घ पात्र) में २ दाना तिल छोड़ दें, मन्त्र पढ़ें–

ओम् तिलोऽसि सोम दैवत्यो गोसवो देव निर्मितः।
प्रत्न मद्भि पृत्तः स्वधया पितॄन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।

- ☐ चुपचाप अर्घपात्र में चंदन-फूल छोड़ दें।

☐ अर्घपात्र (दोनिया) से कुशा निकाल कर दोनिया के सामने वाले भोजन पात्र (पत्ता) पर उत्तर की ओर अग्रभाग करके रख दे।

☐ संकल्प वाला मोटक लेकर पूजा के लोटा से बोर कर इस कुश पर जल छिड़क दें।

☐ दाहिने हाथ से इन अर्घपात्र (दोनिया) को ढंक ले–मंत्र पढ़ें–

ओम् या दिव्या आपः पयसा सं वभूवुर्या अन्त रिक्षा उत पार्थि वीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाश ७७ स्योना सुहवा भवन्तु।

☐ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें–

अद्य अमुक गोत्र पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी देवि) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एष हस्तार्घः ते स्वधा।

☐ संकल्प करके हाथ का तिल-जल दोनिया पर छिड़क दे। मोटक सामने भूमि पर रख दें।

☐ अर्घ पात्र उठाकर २ बूंद जल भोजन पात्र पर रखें कुशा पर शेष आसन मोटक पर चढ़ा दें।

☐ भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठा कर दोनिया (अर्घपात्र) में रख दे।

☐ दोनिया आसन के पीछे (दक्षिण में) उलट कर रख दें। कहे–

॥ पित्रे स्थान मसि ॥

☐ श्राद्ध के अन्त तक इन उलट कर रखी दोनिया को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

☐ आसन मोटक पर २ दाना तिल छिड़क दें।

☐ आसन मोटक पर चुपचाप मन में पिता (माता) का ध्यान करता हुआ चंदन-तिल-फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा कर पूजन कर दें।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें–

॥ अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी देवि) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि ते स्वधा ॥

☐ मोटक सामने भूमि पर रख दें।

- ☐ संकल्प के बाद हाथ का जल-तिल आसन मोटक पर छिड़क दें।
- ☐ दाहिने हाथ में जल लेकर आसन मोटक, भोजन पात्र आदि के चारों ओर घुमा कर भूमि पर छोड़ दें।

ओम् यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।

- ☐ १ दोनिया में थोड़ा सा जल छोड़कर अग्निकोण में (पितृ आसन के बाएं) एक किनारे रख दें।
- ☐ १ चम्मच पिण्डा वाली खीर हाथ में लेकर तिल-घी लगा कर इस दोनिया में छोड़ दें। मंत्र पढ़ें–

॥ इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः ॥

- ☐ भोजन पात्र पर १ दोनिया रख कर–थोड़ा-सा जल भर दें।
- ☐ भोजन पात्र पर १ बूंद घी तथा आधा चम्मच खीर रख दें।

- ☐ दोनों हाथों के अंगूठों से शहद छू कर, हाथ को उलटा कर (हथेली नीचे रहे)। भोजन पात्र पर रखे घी-खीर-जल को ढंक लें या भोजन पात्र को छू लें। मंत्र पढ़ें–

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ऽ७ रजः। मधुद्यौ रस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँअस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
मधु-मधु-मधु।

- ☐ बाएं हाथ से भोजन पात्र को छूता हुआ। निम्न मंत्र पढ़ें–

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेअमृतेअमृतं जुहोमि स्वाहा।
(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पा ऽ७ सुरे स्वाहा।
(३) कृष्ण काव्य मिदं रक्ष मदीयम्।

- ☐ बाएं उल्टे हाथ से भोजन पात्र को छू कर दाहिने हाथ से भोजन पात्र पर का घी-खीर दोनियां का जल तीन बार मोटक आसन पर छुआ दें।

खीर – इदमन्नम्। इदमन्नम्। इदमन्नम्।

घी – इदमाज्यम्। इदमाज्यम्। इदमाज्यम्।

जल – इमा आपः। इमा आपः। इमा आपः।

फिर खीर– इदं कव्यम्। इदं कव्यम्। इदं कव्यम्।

☐ भोजन पात्र पर तिल छिड़क दे, निम्न मंत्र पढ़ें–

ओम् अपहता असुरा रक्षा ७७ सिवेषिददः।

☐ मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करें–

अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (अमुक गोत्रे मातः अमुकी देवी) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एतत्तेऽन्नं सोपकरणं स्वधा।

☐ हाथ का तिल-जल आसन मोटक पर छिड़क दें–

☐ सव्य होकर–अपना नाक-कान छू लें, गायत्री जप करें तथा निम्न मन्त्रों का पाठ करें–

(१) मधुवाता ऋतायते मधुक्षरिन्त सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ७७ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुममाँअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
ओम् मधु-मधु-मधु ।।

(२) अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। तत्सर्व मच्छिद्र मस्तु।।

☐ अपने पैर के नीचे कुशा रख कर निम्न मंत्रों का पाठ करें–

(१) कृणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वाम वाँ इमेन।
तृष्वीमनु प्रसितिम् द्रूणानोऽस्ताऽसि विद्ध्य रक्षसस् तपिशठैः।

(२) तव भ्रमासम् आशु या पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।
तपू ७७ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः।

(३) प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अध श७७सोयो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।

(४) उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्य मित्राँ ओषतान् तिग्म हेते।
यो नो अराति७७समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यत सं न शुष्कम्।

(५) ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्या न्यग्ने।
अवस्थिरा तनुहि यातु जूनाञ्जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून्।

□ पितृ भोजन पात्र पर २ दाना तिल छिड़क कर पिर मन्त्र पाठ करें–

उदीरता मवर उत्परा स उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयु रवृका ऋतज्ञास्तेनो ऽवन्तु पितरो हवेषु।
अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वय ७७ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।
येनः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनू हिरे समपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः स ७७ रराणो हवी ७७ ष्यु शन्नु शद्भिः प्रति काममत्तु।

॥ पुरुषसूक्त का पाठ करें ॥

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ७७ सर्वत स्पृत्वाऽत्यष्ठिद् दशाङ्गुलम्।

पुरुषएवेद ७७ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उता मृतत्व स्ये शानो यदन्ने नाति रोहति।
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि।
त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यत्क्रामत् साशना नशनेअभि।
ततोविराड जायत विराजो अधिपूरुषः।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दां ७७ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा दजायत।

तस्मा दश्वा अजायन्त येके चो भयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।
तं यज्ञम्वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्वाहू किमूरू पादा उच्येते।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७७ शूद्रो अजायत।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादिग्न रजायत।
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७७ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन्।

यत्पुरुषेण हविष देव यज्ञ मतन्वत।
वसन्तोऽस्यासी दाज्यङ् ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन् तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम्।
यज्ञेन यज्ञ मजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनो निमिषएकवीरः शत ७७ सेना अजयत्साकमिन्द्रः।
नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः।
शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च।
ओम् नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे।
नमः पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः।

सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालं जरे गिरौ।
चक्र वाकाः सरद्वीपे हंसा सरसि मानसे।
तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेद पारगाः।
प्रस्थिता दूरमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसीदथ।
नमस्तेऽहं पितॄ न् स्वर्गे ये वसन्त्यधिदेवताः।
देवैरपि हि तृप्यन्तु ये च श्राद्धैः स्वधोत्तरैः।

॥ ओम् रुची रुची रुचिः ॥

☐ अपसव्य होकर विकर पिण्ड दें।

☐ अग्नि कोण में एक किनारे (जिससे कुछ छू न जाय) ३ कुशा का दुकड़ा दक्षिण की ओर अग्रभाग करके विकर आसन के निमित्त रख दें।

☐ १ दोनिया में १ पिण्ड-तिल-घी-शहद लगा कर रख दे, जल ले लें।

☐ ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से ढंक लें, मंत्र पढ़ें–

ओम् अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।

☐ अपने आसन से उठकर अग्नि कोण में जो ३ कुशा-आसन रखा है उसी पर पिण्ड सहित दोनिया उलट कर रख दें।

☐ दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दें।

☐ बाहर निकल कर हाथ-पांव धोकर अपने स्थान पर फिर बैठे।

☐ सव्य होकर अपने ऊपर जल छिड़कें (पूर्व-मुख किए रहे)–

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

☐ ३ बार आचमन करें–

ओम् नारायणाय नमः। केशवाय नमः। माधवाय नमः।

☐ हाथ धो लें दोनों हाथ में दूसरी पवित्री (पैंती) पहन लें।

☐ हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करें।

अनादि निधनो देव शंख चक्र गदाधर।

अव्यक्त पुण्डरीकाक्ष सर्व पाप हरो भव।

☐ जनेऊ-अंगोक्षा उलटा कर अपसव्य हो जाए, दक्षिण की ओर मुख कर लें।

☐ बाएं हाथ में एक कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से वेदी पर एक रेखा (लाइन) खींचे दें। मंत्र पढ़ें–

ओम् अपहताऽअसुरा रक्षा ꣳ सिवे दिषदः।

☐ लाइन खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर दिशा में फेंक दें।

☐ गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर वेदी पर घुमा दें; मंत्र पढ़ता रहे।

ओम् ये रूपाणि प्रतिमुञ्च माना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।

परापुरो ये भरन्त्यग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्यमात्।

☐ घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दें।

☐ मोटक से वेदी पर जल छिड़क दें, मंत्र पढ़ता रहे–

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षादायिकाः।

☐ कुशा को बीच से अलग कर ३ कुश टुकड़ों को वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दें।

☐ दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे।

☐ सव्य होकर–अपना नाक-कान छू लें। हरि स्मरण करें।

☐ पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें–

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।

☐ अपसव्य होकर–दणिक्ष की ओर मुख कर लें।

☐ वेदी के आगे (अपनी ओर) एक दोनिया रख दें।

☐ दोनिया में थोड़ा जल भर दें, तिल-चंदन-फूल छोड़ दें।

☐ मोटक तिल-जल लेकर–बाएं हाथ से दोनिया को छू लें। संकल्प पढ़ें–

|| अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी नाम्नी देवि) सांवत्सरिक एकद्दिष्ट श्राद्धे पिण्ड स्थाने ऽत्रावने निक्ष्व ते स्वधा ||

☐ हाथ का तिल-जल-दोनिया पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।

☐ दोनिया का आधा जल बेदी पर बिछे कुशा पर चढ़ा दें।

☐ शेष जल सहित दोनिया संभाल कर अपने स्थान पर फिर वेदी के पास रख दें।

☐ खीर में तिल-घी-शहद मिला कर बेल के समान एक पिण्ड बना लें। थोड़ी बिना तिल की खीर बचाएं रहें।

☐ मोटक-तिल-जल तथा पिण्ड लेकर संकल्प पढ़ें–

|| अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी नाम्नी देवि) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा ||

☐ संकल्प पढ़ कर पिण्ड को वेदी पर कुशा विछाए कुशा के ऊपर रख दें।

☐ हाथ का मोटक भूमि पर रख दें, हाथ का तिल पिण्डा पर चढ़ा दें।

☐ पिण्डा के नीचे वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उनको छू लें।

☐ सव्य होकर आचमन करें। हरि स्मरण करें।

ओम् शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकांतं कमल नयनं योगिभिध्यनि गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।

☐ फिर अपसव्य होकर-बायीं ओर से (पीछे मुख घुमा कर) श्वांस (सांस) को रोकें।

☐ पितर का ध्यान करता हुआ मुख घुमा का सामने पिण्ड की ओर रोकी हुई श्वांस (सांस) छोड़ दें, मंत्र पढ़ें–

टिप्पणी–पिण्डदान हाथ के अंगूठा तथा तर्जनी अंगुली के बीच में (पितृ तीर्थ से) दिया जाता है। दक्षिणाग्र देना चाहिए।

॥ ओम् अमी मदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिषत् ॥

- ☐ मोटक-तिल-जल तथा शेष जल सहित दोनिया (जिसका आधा जल वेदी पर चढ़ाया है) दाहिने हाथ में लेकर संकल्प पढ़ें–

  ॥ ओम् अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी नाम्नी देवि) सांवत्सरिक एकदि्दष्ट श्राद्धे अत्र प्रत्वने निक्ष्व ते स्वधा ॥

- ☐ दोनिया का जल पिण्डा पर चढ़ा दें। दोनिया अलग रख दें।
- ☐ हाथ पर लगा तिल पिण्डा पर छोड़ दें।
- ☐ टेंट में (धोती में) जो कुशा-तिल लपेटा है उसे निकाल कर नैऋत्य कोण में अपने दाहिने हाथ दक्षिण की ओर फेंक दें।
- ☐ सव्य होकर आचमन करें, गायत्री का जप करें फिर अपसव्य हो जाएं।
- ☐ कच्चा सूत लेकर पिण्डा पर चढ़ा दें, निम्न मंत्र पढ़ें–

  ओम् नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय।

  नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् मन्यवे।

नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः पितर् देहि नमस्ते पितर् देष्म।

एतत्ते पितर् वासः।

- ☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें–

  ॥ अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी नाम्नी देवि) सांवत्सरिक एकोदि्दष्ट श्राद्ध पिण्डे एतत् वासः ते स्वधा ॥

- ☐ हाथ का तिल-जल पिण्डा पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।
- ☐ चुपचाप मौन होकर पिण्डा पर क्रमशः–चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दें।
- ● नैवेद्य के लिए जो थोड़ी सी खीर बिना तिल वाली बचाकर रखी है, उसे चढ़ा दे। साथ ही ब्राह्मण भोजन के लिए जो वस्तुएं हैं, उस सबको एक व्यक्ति के भोजन के अनुसार से पिण्ड पर चढ़ा दें।
- ☐ भोजन पात्र पर क्रमशः जल-फूल-अक्षत छोड़ दें।

|| ओम् शिवा आपः सन्तु || इति जलम् ।

ओम् सौमनस्य मस्तु || इति पुष्पम् ।

ओम् अक्षतं चारिष्टमस्तु || इति अक्षतम् ||

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें–

|| अद्य अमुक गोत्र अमुक पितः अमुक शर्मन् (गोत्रे मातः अमुकी नाम्नी देवि) सांवत्सरिक एकद्दिष्ट श्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकं ते स्वधा ||

☐ सव्य हो जाए।

☐ हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर हाथ घुमा कर पिण्डा पर जल चढ़ा दें और कहें–

|| ओम् अघोरः पिता अस्तु ||

☐ पूर्व की ओर मुख घुमा कर–हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें–

- दक्षिणाग्र-पूर्वाग्र आदि का अर्थ है, कुशा का अग्र भाग दक्षिण या पूर्व में रहे।
- पितृतीर्थ–अंगूठा और पहली तर्जनी अंगुली के बीच को कहते हैं।

|| ओम् गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् वेदाः सन्ततिरेव च।

श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु

अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि।

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन।

एताः सत्याशिषः सन्तु ।

☐ अपसव्य होकर–पिण्डा पर से पान-सुपारी-फूल-सूत आदि पूजन-सामग्री हटा दें।

☐ पिण्डा पर ३ कुशा का टुकड़ा दक्षिणाग्र रख दें।

☐ १ दोनिया में दूध लेकर दक्षिणाग्र पितृतीर्थ से पिण्डा पर चढ़ा दें। देते समय निम्न मंत्र पढ़ता रहे–

ओम् ऊर्ज वहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रु तम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितरम्।

☐ थोड़ा झुक कर पिण्डा को सूंघ लें। पिण्डा को वेदी से उठा कर अलग रख दें।

☐ वेदी पर बिछे हुए कुशा को उठा कर अग्नि में डाल दें।

☐ अर्घपात्र की दोनिया को सीधी कर दें, उसमें तिल छोड़ दें।

☐ सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें।

☐ भगवान का ध्यान करें।

☐ १ कुशा लेकर उसके मूल से बीच की वेदी पर शंक-चक्र (६ तथा ४ अंक) लिख दें।

☐ अक्षत-फूल लेकर भगावन की प्रार्थना करें।

|| ओम् शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।

विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम् ।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम् ||

☐ हाथ का अक्षत-फूल वेदी पर चढ़ा दें, और शंक-चक्र का पूजन कर दें। मंत्र पढ़ें–

। ओम् शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः। विष्णवे नमः।

☐ गन्ध-अक्षत-फूल आदि चढ़ा दें।

☐ कपूर की आरती कर दें।

☐ अपसव्य हो जाए। हाथ में जल-तिल-फूल लेकर दीपक बुझा दें।

☐ अंगुली से लोटा बजायें–

ओम् वाजे वाजे वत वाजिनो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः

अस्य मध्वः वित मादयध्वम् तृप्तायात। पथिभिर्देवयानैः।

☐ सव्य होकर पूर्वमुख त्रिकुश-जल अक्षत लेकर क्रमशः–

☐ गोदान करें–

|| अद्य गोत्रः शर्माऽहं पितुः गोत्रस्य शर्मणः (गोत्राया मातुः देव्याः) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्धे गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं सांगता सहितं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ||

□ आचार्य को दक्षिणा दें।

अद्य गोत्रः शर्माऽहं पितुः गोत्रस्य शर्मणः (गोत्राया मातुः देव्याः) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् इदं दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

□ ब्राह्मण भोजन संकल्प करें–

अद्य अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक शर्मणः (गोत्रायाः मातुः देव्याः) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध परिपूर्णतावाप्तये ब्राह्मणं (ब्राह्मणान्) भोजयिष्ये। तस्मै (तेभ्यो) दक्षिणां ताम्बूलं च दास्ये।

□ तीन स्थान पर गौ-कुत्ता-कौआ के लिए ग्रास (अगरासन) दें।

- १ ब्राह्मण हों तो (ब्राह्मणम्) तथा (तस्मै) ● अधिक ब्राह्मण हों तो (ब्राह्मणान्) तथा (तेभ्यो) कहना चाहिए

□ हाथ में जल-अक्षत लेकर कहें–

ओम् सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रति गृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः।

□ हाथ का जल गौ ग्रास पर छोड़ दें।

□ जनेऊ-अंगौछा माला की तरह कर ले, जवा-जल लेकर कहें–

ओम् श्वानौ द्वौ श्याम शबलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्याता मेताव हिंसकौ।

□ हाथ का जल कुत्ता के ग्रास पर छोड़ दें।

□ अपसव्य होकर जल-तिल ले कहें–

ओम् ऐन्द्रवरुण वायव्या याम्या वै नैऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृहुणन्तु भूमौ ग्रासं मयोज्झितम्।

□ कौआ के ग्रास पर छोड़ दें।

□ तीन बार गौ ग्रास पर जल छोड़ दें।

Home

Home

□ सव्य हो जाय।

□ हाथ जोड़कर भगवान की प्रार्थना करें–

ओम् प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सर्म्पूतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।
सर्वपरिपूर्ण कामः विष्णुं स्मेरत्। श्री विष्णुः। श्री विष्णुः। श्री विष्णुः।

□ ब्रह्मण का चरण धोकर उन्हें भोजन कराएं। पान-दक्षिणा दें।

□ ब्राह्मण यजमान को चंदन अक्षत लगाकर मंत्राक्षत दें।

□ यजमान ब्राह्मण की परिक्रमा करें पांव छूकर प्रणाम करें। विदा करें।

●●●

Home